

अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

अनित्यता का चिंतन कर मोह-मूर्छा को तोड़ने का हो प्रयास: आचार्यश्री महाश्रमण

-ग्रामीण क्षेत्रों की ओर गतिमान अहिंसा यात्रा पहुंची कुत्तलम

-राज विद्यालय में आचार्यश्री का हुआ पावन पदार्पण

-आचार्यश्री ने लोगों को मोह को कम करने का बताया मार्ग

**09.01.2019 कुत्तलम, नागापत्तिनम (तमिलनाडु):** सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जैसे जीवनोपयोगी सूत्रों द्वारा जन-जन को सन्मार्ग दिखाने, लोगों के भीतर सूख रही मानवता को बीजों का अभिसिंचन करने के लिए जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें देदीप्यमान महासूर्य, शांतिदूत, भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के निरंतर गतिमान हैं। वर्तमान में आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के साथ दक्षिण भारत की धरती विहरणमान हैं। अहिंसा यात्रा अपने प्रणेता संग तमिलनाडु राज्य के नागापत्तिनम जिले के लोगों को अपने तीन प्रमुख उद्देश्यों से अवगत करा रही है। आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगलवाणी से पावन बोध प्राप्त कर अनेक तमिलवासी अहिंसा यात्रा के संकल्पों को स्वीकार भी कर रहे हैं और उन्हें अंगीकार भी करने का प्रयास कर रहे हैं।

आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी जनकल्याणकारी अहिंसा यात्रा के साथ बुधवार को मयिलाडुतुरै मंगल प्रस्थान किया। मयिलाडुतुरै के लोग आचार्यश्री के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। आज प्रातः के मौसम में हल्की शीतलता व्याप्त थी। ग्रामीण क्षेत्रों से गुजरती अहिंसा यात्रा अनजान लोगों के लिए आश्चर्य का कारण बनी हुई थी, किन्तु उन्हें जैसे ही अहिंसा यात्रा और आचार्यश्री के बारे में जानकारी प्राप्त हो रही थी, वे तत्काल आचार्यश्री के समक्ष उपस्थित होकर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। आचार्यश्री लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर कुत्तलम गांव स्थित राज विद्यालय के प्रांगण में पधारे।

इस विद्यालय के एक हॉल में आयोजित प्रातः के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि हमारी दुनिया में अनित्यता है तो अनित्यता भी है। बारह भावनाओं में अनित्य अनुप्रेक्षा की बात बताई गई है। इसके द्वारा मोह-मूर्छा को कम करने का प्रयास किया जा सकता है।

किसी का राज्य स्थाई नहीं होता। जो राज्य आज उसका है, पहले किसी और का था और आगे भी किसी और को प्राप्त हो जाएगा। आदमी खुद भी स्थाई नहीं है। ऐश्वर्य, सत्ता, प्रभुत्व कुछ भी स्थाई नहीं। धन भी नित्य नहीं है, स्वर्ण भी स्थाई नहीं, राजा से प्राप्त हुई चीजें भी स्थाई नहीं, देवताओं का सुख भी स्थाई नहीं। रूप, स्वास्थ्य, जीवन कुछ भी स्थाई नहीं। सबका संयोग है और जिसका संयोग होता है, उसका वियोग सुनिश्चित है। संसार की सारी स्थितियां अनित्य हैं। मोह की चेतना संसार है। आदमी अमोह की साधना के द्वारा मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। इसके लिए आदमी को अनित्यता का चिंतन करना चाहिए। अनित्यता के चिंतन से मोह को कम किया जा सकता है।

इस अनित्य संसार में आदमी को धर्म की शरण में जाना चाहिए ताकि आत्मा का कल्याण हो सके। जहां धर्म की साधना और आत्मकल्याण की साधना हो वह धर्मशाला होता है। संसार की अनित्यता को जानकर मोह-मूर्छा को तोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

---